1

व्यवसाय की प्रकृति एवं क्षेत्र

अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में आप कई गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं। हालांकि, जब कोई आपसे पूछता है कि आप अपने जीवन में क्या बनना चाहते हैं या भविष्य में क्या करना चाहते हैं, तो आपका उत्तर हो सकता है कि ''मैं अपने लिए एक उपयुक्त जॉब चाहता हूं या मैं डॉक्टर बनना चाहता हूं, मैं एक इंजीनियर, एक संगीतकार या एक नर्तक बनना चाहता हूं,'' या आप कह सकते हैं कि मैं अपना खुद का व्यवसाय करना चाहता हूं। लेकिन आप ऐसी कोई भी गतिविधि क्यों करना चाहते हैं। स्पष्टत: मुख्य रूप से यह अपनी आजीविका कमाने के लिए है। प्रत्येक मानवीय गतिविधि जिसमें कि एक व्यक्ति अपनी आजीविका कमाने के उद्देश्य से संलग्न है को मोटे तौर पर आर्थिक गतिविधि कहा जाएगा। इस पाठ में हम इन सभी गतिविधियों, उनके वर्गीकरण और उनसे सम्बन्धित कुछ अन्य पहलुओं को सीखेंगे।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी:

- समाज की आवश्यकताओं एवं इच्छाओं के मध्य अंतर करता है;
- विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाकर समाज की आवश्यकताओं को कैसे संतुष्ट किया जाए यह सुनिश्चित करता है;
- उनके कौशल के अनुसार उनके हित में आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाकर समाज की आवश्यकताओं को कैसे पूर्ण किया जाए, यह सुनिश्चित करता है; और
- उनके कौशल के अनुसार उनके हित में आर्थिक गतिविधियों की पहचान करता है।

1.1 मानवीय गतिविधियां

हर इंसान किसी न किसी एक या दूसरी गतिविधि से जुड़ा हुआ है। इसके अंतर्गत खेती करना, भोजन तैयार करना, फुटबाल खेलना, कहानी की किताबें पढ़ना, स्कूल में पढ़ना, कालेज में

पढ़ाना, ऑफिस में कार्य करना, पार्क में टहलना आदि शामिल हो सकते हैं। यदि आप यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि व्यक्ति क्यों एक या दूसरी गतिविधि में स्वयं को संलग्न किए हुए हैं, तो आप पाएंगे कि ऐसी गतिविधियां करके वे अपनी कुछ आवश्यकताओं या इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं। ये सभी गतिविधियां जो मनुष्य अपनी आवश्यकताओं या इच्छाओं को पूरा करने के लिए करता है। ये मानवीय गतिविधियां कहलाती हैं।

हालांकि, भले ही सभी मानवीय गतिविधियां आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को पूरा करती हैं परंतु अंतिम परिणाम के रूप में उद्देश्यानुसार हर संदर्भ में वे भिन्न-भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, आइये हम एक माँ द्वारा अपने घर पर तैयार किए गए भोजन एवं एक रसोइये द्वारा होटल में तैयार किए गए भोजन की गतिविधि लें। यहां आप देखेंगे कि खाना बनाने का उद्देश्य एवं उसका अंतिम परिणाम भिन्न होता है। (अ) एक माँ खाना पका रही है और दूसरी ओर (ब) एक रसोइया खाना पका रहा है। पहली गतिविधि में माँ परिवार के सदस्यों को खिलाने के उद्देश्य से खाना पका रही है जिसमें उसे वापसी में कुछ मुद्रा नहीं चाहिए, जबकि दूसरे मामले में खाना-पकाना रसोइये की नौकरी का एक हिस्सा है। जिससे उसके बदले में उसे वेतन के रूप में पैसा मिल सके। अंतिम परिणाम देखें तो पहले मामले में आत्म संतुष्टि के साथ-साथ अपने परिवार की देखभाल है, तो दूसरे मामले में वह आजीविका के लिए धन कमा रहा है।

उन सभी आर्थिक गतिविधियों में पेशेवर प्रशिक्षण और कौशल के आधार पर विशेष प्रवृति के व्यक्ति की विशेषज्ञता एवं उसके ज्ञान एवं कौशल का प्रतिपादन शामिल होता है। वे मानवीय गतिविधियों जो धन या आजीविका के उद्देश्य से की जाती है, **आर्थिक गतिविधियां** कहलाती हैं। एक किसान फसल को उगाने, एक कर्मचारी फैक्ट्री में पैसा कमाने एवं एक व्यवसायी की सामान खरीदने एवं बेचने की प्रक्रिया आर्थिक गतिविधियों के उदाहरण हैं।

जबिक अन्य प्रकार की गतिविधियां जो अपनी आत्म संतुष्टि के लिए की जाती हैं, उन्हें **गैर-आर्थिक गतिविधियां** कहा जाता है। जबकि अन्य गतिविधियों जैसे ध्यान लगाना, शारीरिक फिटनेस के लिए खेलकूद में व्यस्त रहना, संगीत सुनना, बाढ़ पीड़ितों को राहत प्रदान करना आदि गैर-आर्थिक गतिविधियों का उदाहरण है।

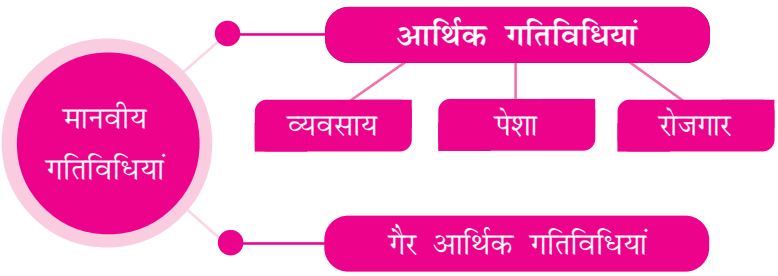

चित्र 1.1 मानवीय गतिविधियां

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-1.1

1. 'आर्थिक गतिविधियों' को परिभाषित कीजिए-

2. नीचे तालिका में निश्चित गैर-आर्थिक गतिविधियां दी गई हैं, उन्हें आर्थिक गतिविधियों में परिवर्तित कीजिए:

   उदाहरण : एक नर्स अपने बीमार पुत्र की देखभाल कर रही है। (गैर आर्थिक गतिविधि) एक नर्स अस्पताल में रोगियों की देखभाल कर रही है। (आर्थिक गतिविधि)

   (क) एक व्यक्ति जो अपने बगीचे में कार्य करता है।

   (ख) एक स्त्री अपने पति के लिए खाना बनाती है।

   (ग) एक व्यक्ति अपनी दीवार पर पुताई करता है।

   (घ) एक शिक्षक अपने बच्चे को घर पर पढ़ाता है।

   (ङ) एक चार्टड एकाउन्टेन्ट अपना स्वयं का एकाउन्टेन्ट तैयार करता है।

1.2 आर्थिक गतिविधियों का वर्गीकरण

आर्थिक गतिविधि एक बार की गतिविधि या निरंतर तरह की हो सकती है।

उदाहरण के लिए आप कपड़े सिलना जानते हैं और एक दिन आप अपने दोस्त के लिए एक शर्ट सिलाई करते हैं और वह आपको कुछ पैसे देता है। बेशक यह एक आर्थिक गतिविधि है क्योंकि आप मौद्रिक लाभ प्राप्त करते हैं, लेकिन यह एक-बार की गतिविधि है। लेकिन अगर आप लगातार इसी आधार पर शर्ट सिलना शुरू करते हैं और इसके लिए पैसे भी वसूलते हैं तो यह कहा जाता है कि आप किसी निरंतर या नियमित आर्थिक गतिविधि में लगे हुए हैं। यह ध्यान रखने की बात है कि किसी विशेष आर्थिक गतिविधि में खुद को नियमित रूप से व्यस्त रखने से लोग अपनी आजीविका कमाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार आर्थिक गतिविधियों में नियमित रूप से व्यस्त रहना और पैसे कमाना, यह व्यवसाय के रूप में जाना जाता है।

वास्तव में हर कोई किसी न किसी व्यवसाय में व्यस्त है। उन व्यवसायों को निम्न वर्गों में देखा जा सकता है-

(क) पेशा

(ख) रोजगार एवं

(ग) व्यवसाय

1.2.1 पेशा

आप डॉक्टरों से अवगत हैं। वे क्या हैं? और क्या करते हैं? वे मूल रूप से ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पास रोग एवं रोगियों की जांच करने के लिए एक विशेष ज्ञान और प्रशिक्षण है, जो कि बीमारी का पता लगाते हैं और फिर उस बीमारी को ठीक करने के लिए इलाज करते हैं और इलाज करने के बदले में वे रोगियों से शुल्क लेते हैं। इसी तरह हमारे बीच चार्टर्ड अकाउंटेंट होते हैं जो खातों, करों आदि से सम्बन्धित मामलों के विशेषज्ञ होते हैं वे शुल्क लेकर ऐसे कामों में लोगों की एवं व्यावसायिक संगठनों की मदद करते हैं। अगर हम आगे देखें तो हमें इंजीनियर, आर्किटेक्ट, फिल्म स्टार, डांसर कलाकार आदि कई लोग ऐसे विशेष क्षेत्रों से जुड़े हुए मिलेंगे जिनको अपने-अपने क्षेत्र में विशेष ज्ञान व प्रशिक्षण हासिल है। ये सभी पेशेवर के रूप में जाने जाते हैं और उनके द्वारा की जाने वाली गतिविधियां पेशा कहलाती है। एक पेशे की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए आइये हम इसकी मूलभूत सुविधाओं को देखें जिन्हें निम्नानुसार सारांशित किया गया है-

(क) पेशा एक व्यवसाय है जिसके लिए व्यक्ति को एक विशेष ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करना पड़ता है।

(ख) अपनी सेवा प्रदान करने के लिए वे जो पैसे लेते हैं उसे आमतौर पर 'फीस' के रूप में जाना जाता है।

(ग) अधिकांश पेशेवरों को एक पेशेवर निकाय द्वारा विनियमित किया जाता है, जो सदस्य पेशेवरों द्वारा पालन किए जाने वाले आचार संहिता का निर्माण करता है। उदाहरण के लिए भारत में चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट को एक पेशेवर संस्था द्वारा विनियमित किया जाता है, जिसे इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इंडिया कहा जाता है, वैसे ही क्रिकेटर्स के लिए इंटरनैशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) है।

(घ) ये पेशेवर व्यक्ति किसी विशेष कॉलेजों, विश्वविद्यालयों या विशेष संस्थानों से ज्ञान एवं कौशल का प्रशिक्षण लेते हैं। कुछ विशेष मामलों में व्यक्ति इस तरह के ज्ञान और कौशल को प्रशिक्षण या कोचिंग के माध्यम से प्राप्त करते हैं, उसी क्षेत्र के विशेषज्ञ जैसे नर्तक एवं संगीतकार आदि।

(ङ) ये पेशेवर समुदाय के लोग स्वयं अपनी सेवा प्रदान करते हैं और अपनी सेवाओं के लिए फीस प्राप्त करते हैं जो उनके अभ्यास में भी काम आता है। हालांकि इनमें से कुछ विभिन्न संगठनों में कर्मचारियों या सलाहकार के रूप में भी काम करते हैं।

(च) वे सभी आर्थिक गतिविधियाँ जिनमें पेशेवर प्रशिक्षण और कौशल के आधार पर व्यक्तिगत सेवा प्रदान कर विशिष्ट और विशेषज्ञ प्रकृति के साथ कुछ नियमों और विनियमों (आचार संहिता) के पालन करने को पेशा कहा जाता है।

टिप्पणी

1.2.2 रोजगार

आपने लोगों को नियमित रूप से कार्यालय, कारखाने एवं फर्मों आदि में कार्य के लिए जाते हुए देखा होगा। ये ऐसे व्यक्ति हैं जो किसी न किसी संगठनों या व्यक्तियों द्वारा मजदूरी या वेतन के बदले में कार्य करते हैं। और वे कहते हैं कि रोजगार में हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि एक 'डाकिया' जो 'डाक विभाग' में पत्र बांटने के लिए रोजगार में है। वहां डाक विभाग को नियोक्ता एवं डाकिया को वहां का कर्मचारी कहा जाता है। वह डाकिया कुछ नियमों एवं शर्तों के आधार पर कार्य करता है और उसके बदले में उसे मासिक वेतन मिलता है।

रोजगार की मुख्य विशेषताएं हैं-

(क) यह एक व्यवसाय है जहां एक व्यक्ति (जिसे कर्मचारी कहा जाता है) दूसरों के लिए कार्य करता है (वह नियोक्ता कहलाता है)

(ख) कार्य के कुछ नियम और शर्तें होती हैं, जैसे कार्य के घंटे (दिन में कितने घंटे) कार्य की अवधि (एक सप्ताह या महीने में कितने दिन) अवकाश सुविधा, वेतन, मजदूरी कार्य का स्थान आदि।

(ग) कर्मचारियों को वेतन (साधारणत: मासिक आधार पर भुगतान किया जाता है) या उनके कार्य के बदले में मजदूरी (सामान्य रूप से दैनिक/साप्ताहिक आधार पर भुगतान किया जाता है।) यह राशि आमतौर पर पारस्परिक सहमति से पूर्व निर्धारित होती है और समय एवं कार्य के अनुसार बढ़ भी सकती है।

(घ) कानूनी रूप से, नियोक्ता एवं कर्मचारी का सम्बन्ध एक अनुबंध पर आधारित होता है और किसी भी पक्ष से कोई विचलन होने पर दूसरा पक्ष कानून का सहारा ले सकता है।

(ङ) कुछ ऐसी नौकरी या रोजगार भी हैं जिनके लिए किसी विशेष तकनीकी शिक्षा या विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन कुशल नौकरियों, विशेष नौकरियों और तकनीकी नौकरियों के लिए, बुनियादी/तकनीकी शिक्षा के एक निश्चित स्तर के ज्ञान की आवश्यकता होती है।

(च) रोजगार के पीछे इसका मुख्य उद्देश्य मजदूरी एवं वेतन के माध्यम से एक सुनिश्चित आय को सुरक्षित करना है।

कुछ पारिश्रमिक के लिए सेवा के अनुबंध के अंतर्गत एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को प्रदान की जाने वाली आर्थिक सहायता को रोजगार कहा जाता है।

1.2.3 व्यवसाय

आपने टाटा कंपनियों के विषय में अवश्य सुना होगा। वे नमक से लेकर ट्रकों एवं बसों जैसी बहुत सी वस्तुओं का निर्माण करते हैं और सभी व्यक्तियों को बेचते हैं। इस पूरी प्रक्रिया से वे लाभ कमाते हैं। आपने पास में किसी दुकानदार को देखा होगा। वह क्या करता है? वह

बड़ी मात्रा में वस्तु खरीदकर छोटी मात्रा में बेचता है। वह इस प्रक्रिया में लाभ कमाता है। इसी तरह एक केबल टीवी आप्रेटर एक निश्चित कीमत पर हमें कनेक्शन प्रदान करता है जिससे हम टेलीविजन सेट पर विभिन्न चैनल देख पाते हैं। यह सभी व्यवसाय से करते हैं और इन्हें व्यवसायी कहा जाता है। वे सभी लाभ कमाने के लिए नियमित रूप से अपनी गतिविधियों को अंजाम देते हैं। इस प्रकार 'व्यवसाय' शब्द उन मानवीय गतिविधियों से जुड़ा होता है जिसमें वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन या विनिमय करके लाभ कमाया जाता है।

व्यवसाय को एक आर्थिक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तु की बिक्री हस्तांतरण और विनिमय के लिए माल और सेवाओं का उत्पादन या क्रय शामिल है।

हम मिल मालिकों, ट्रांसपोर्टरों, बैंकरों, व्यापारियों, दर्जियों, टैक्सी आपरेटरों आदि को देखते हैं वे सब व्यवसायी हैं। वे सभी उत्पाद या व्यापार (खदी एवं बिक्री) की किसी न किसी गतिविधि से जुड़े हैं, कुछ तो सेवाएं भी प्रदान करते हैं। उन्होंने जोखिम लेकर अपने पैसे का निवेश किया है जिससे वे लाभ प्राप्त कर सकें। इस प्रकार व्यवसाय की मुख्य विशेषताएं हैं:

(क) यह एक व्यवसाय ही है जहां एक व्यक्ति **माल एवं सेवाओं** के निर्माण या खरीद एवं बिक्री में लगा हुआ है। यह वस्तु उपभोक्ता वस्तुएं या पूंजीगत वस्तुएं हो सकती है। इसी तरह सेवाओं के अंतर्गत परिवहन, बैकिंग, बीमा आदि के रूप में हो सकती हैं।

(ख) इन गतिविधियों को **नियमित रूप से** किया जाना चाहिए। एकल लेन-देन को आम तौर पर व्यवसाय के रूप में नहीं माना जाता है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति अपनी पुरानी कार को लाभ में बेचता है, तो उसे व्यावसायिक गतिविधि नहीं माना जाता है। हालांकि, यदि वह पुरानी कारों को खरीदने और उन्हें नियमित आधार पर बेचने की गतिविधि में लगा हुआ है, तो उसे व्यावसायिक गतिविधि के अंतर्गत माना जाएगा।

(ग) व्यवसाय का एकमात्र उद्देश्य **लाभ** कमाना है। यह एक व्यवसाय के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

(घ) प्रत्येक व्यवसाय में नकदी या वस्तु या दोनों के **निवेश** की आवश्यकता होती है। प्राय: यह स्वामी द्वारा प्रदान की जाती है या उसके द्वारा अपने जोखिम पर उधार ली जाती है।

(ङ) **कमाई** सदैव अनिश्चित होती है क्योंकि भविष्य अप्रत्याशित होता है और एक व्यापारी का कुछ कारकों पर कोई नियंत्रण नहीं होता हे जो उसे प्रभावित कर सकते हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यवसाय में जोखिम का एक तत्व शामिल होता है और वही व्यवसायी या मालिक द्वारा वहन किया जाता है।

पाठगत प्रश्न-1.2

1. 'पेशे' को अपने शब्दों में परिभाषित करें।
2. निम्नलिखित गतिविधियों की एक सूची दी जा रही है। प्रश्न के अंत में दिए गए गोले में अपना नंबर डालकर इन गतिविधियों को व्यावसायिक पेशे या रोजगार के रूप में वर्गीकृत करें-

   (क) अपने स्थानीय स्टेशन में ड्यूटी पर कार्यरत पुलिसकर्मी।

   (ख) एक शिक्षण संस्थान में कार्यरत शिक्षक।

   (ग) राज्य सड़क परिवहन निगम की बस चलाने वाला चालक।

   (घ) एक टैक्सी चालक जो अपनी खुद की टैक्सी चलाता है।

   (ङ) एक गांव में मछली बेचने वाला मछुआरा।

   (च) गोपाल द्वारा घर पर अपने ग्राहकों के कपड़े नियमित सिलना।

   (छ) एक कारखाने में काम करने वाला दैनिक कर्मचारी

   (ज) एक माली द्वारा कालेज के लॉन का रख-रखाव करना

   (झ) कोर्ट में वकालत करने वाला एक वकील

   (ण) अपने परामर्श देकर अपनी फर्म चलाने वाला एक इंजीनियर

व्यवसाय	पेशा	रोजगार
○○○○ ○○○○	○○○○ ○○○○	○○○○ ○○○○

1.2.4 व्यवसाय, पेशा एवं रोजगार की तुलना

व्यवसाय की आवश्यक विशेषताओं के विषय में जानने के बाद हम इसे एक पेशे और रोजगार से इस प्रकार अलग करेंगे।

आधार	व्यवसाय	पेशा	रोजगार
(क) स्थापना	व्यवसाय शुरू करने का निर्णय लेना, जहां तक आवश्यक हो, पंजीकरण जैसी कानूनी औपचारिकताओं का अनुपालन करना।	एक पेशेवर संस्था की सदस्यता लेना आवश्यक है।	एक नियोक्ता के साथ सेवा अनुबंध के साथ शुरूआत करना।

(ख) योग्यता	किसी विशिष्ट योग्यता की आवश्यकता नहीं है	उस क्षेत्र का पेशेवर ज्ञान और प्रशिक्षण आवश्यक है	नियोक्ता और निहित रोजगार की जरूरतों के अनुसार।
(ग) पूंजी	पूंजी निवेश करना आवश्यक है। इसकी राशि व्यवसाय संचालन की प्रकृति और उसके पैमाने पर निर्भर करती है।	स्थापना के लिए कुछ पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।	कोई पूंजी निवेश की आवश्यकता नहीं है।
(घ) कार्य की प्रकृति	वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन या उनका क्रय एवं विक्रय	निपुण सेवा	कार्य का निष्पादन
(ङ) वापसी या पुरस्कार	लाभ	पेशेवर शुल्क	मजदूरी या वेतन
(च) जोखिम	हानि का जोखिम	पर्याप्त फीस नहीं मिलने की जोखिम	जब तक व्यवसाय कार्यालय अपना संचालन जारी रखे तब तक कोई जोखिम नहीं
(छ) प्रेरणा	लाभ कमाने की प्रेरणा	शुल्क लेते हुए सेवा करने की प्रेरणा	आजीविका कमाना ही एकमात्र प्रेरणा

1.3 व्यवसाय का महत्व

आज व्यापार आधुनिक समाज का एक अभिन्न अंग बन गया है। यह लाभ कमाने की एक संगठित एवं व्यवस्थित गतिविधि है। यह एक सामान्य आर्थिक लक्ष्य की दिशा में काम करने वाले लोगों की गतिविधियों से सम्बन्धित है। आज के आधुनिक समाज का व्यवसाय के बिना कोई अस्तित्व नहीं है। व्यवसाय के महत्व को निम्नानुसार बताया जा सकता है।

(क) व्यवसाय लोगों के जीवन में सुधार करने के लिए, सही समय एवं सही स्थान पर बेहतर गुणवत्ता वाली बेहतर किस्म की वस्तुओं एवं सेवाओं को प्रदान करता है।

(ख) यह काम करने और आजीविका कमाने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार इससे देश में रोजगार उत्पन्न होता है, जो बदले में समाज से गरीबी के स्तर को कम करता है।

(ग) यह राष्ट्र के दुर्लभ संसाधनों का उपयोग करता है तथा माल एवं सेवाओं को बड़े पैमाने पर उत्पादन की सुविधा देता है।

(घ) यह गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन कर उन्हें विदेशों में निर्यात करके राष्ट्रीय छवि को बेहतर बनाता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक मेले और प्रदर्शनियों में भाग लेने से यह बाहरी देशों की दृष्टि में अपने देश की प्रगति एवं उपलब्धियों को प्रदर्शित करता है।

(ङ) यह देश के लोगों को अंतर्राष्ट्रीय मानक की गुणवत्ता के सामान का उपयोग करने में सक्षम बनाता है। यह विदेशों से महत्वपूर्ण वस्तुओं के उत्पादन के आधुनिक तरीकों को लागू करके देश में गुणवत्ता से युक्त सामान का उत्पादन कर संभव हुआ है।

(च) यह निवेशकों को उनके पूंजी निवेश पर बेहतर वापसी का लाभ देता है और व्यवसाय को बढ़ाने का अवसर भी प्रदान करता है।

(छ) यह देश में पर्यटन सेवाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, व्यापार प्रदर्शनी आदि को प्रायोजित करके सामाजिक हित को बढ़ावा देता है, जो देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों को अपनी संस्कृति, परंपराओं और प्रथाओं का आदान-प्रदान करने में सक्षम बनाता है।

(ज) यह विभिन्न देशों के लोगों के बीच संस्कृति के आदान-प्रदान की सुविधा भी प्रदान करता है और अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द और शांति को बनाए रखता है।

(झ) यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में भी सहायक होता है। यह नए-नए उत्पादों एवं सेवाओं पर शोध में अनुसंधान और विकास पर बड़ी राशि खर्च करता है। इसीलिए औद्योगिक अनुसंधान के माध्यम से कई नवीन उत्पादों एवं सेवाओं का विकास किया जाता है।

1.4 व्यवसाय के उद्देश्य

व्यावसायिक उद्देश्य एक ऐसा बिन्दु है, जो एक व्यावसायिक संगठन एक निश्चित अवधि में प्राप्त करना चाहता है। आमतौर पर यह माना जाता है कि व्यवसाय का एक ही उद्देश्य है, वह लाभ कमाना और अपने मालिकों के हितों की रक्षा करना। जबकि कोई भी व्यवसाय अपने कर्मचारियों, ग्राहकों के साथ-साथ पूरे समाज के हितों की अनदेखी नहीं कर सकता है। व्यावसायिक उद्देश्यों को राष्ट्रीय लक्ष्यों और आकांक्षाओं के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कल्याण की दिशा में योगदान करने के लिए भी लक्षित होना चाहिए। व्यवसाय के उद्देश्यों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है-

(क) आर्थिक उद्देश्य

(ख) सामाजिक उद्देश्य

(ग) मानवीय उद्देश्य

(घ) राष्ट्रीय उद्देश्य

(ङ) वैश्विक उद्देश्य

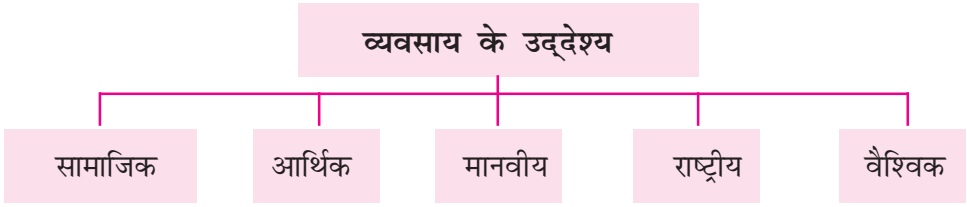

चित्र 1.2 व्यवसाय के उद्देश्य

आइये अब इन उद्देश्यों को विस्तार से देखें-

(क) एक व्यवसाय के **आर्थिक उद्देश्य,** उन उद्देश्यों को संदर्भित करते हैं जो कि लाभ कमाने तथा व्यवसाय के लाभ कमाने के उद्देश्य पर सीधा प्रभाव डालते हैं। व्यवसाय के कुछ मुख्य आर्थिक उद्देश्य इस प्रकार है-

(अ) पर्याप्त लाभ कमाना

(ब) नए बाजारों की खोज एवं अधिक ग्राहकों को तैयार करना

(स) व्यवसाय संचालन की वृद्धि एवं विस्तार

(द) माल एवं सेवाओं में नवाचार एवं सुधार करना

(य) उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम संभव तरीके से उपयोग करना।

(ख) व्यवसाय के **सामाजिक उद्देश्य** वे हैं जो समाज को लाभान्वि करने के उद्देश्य से किए जाते हैं। कुछ प्रमुख सामाजिक उद्देश्य इस प्रकार है-

(i) समाज में गुणवत्तापूर्ण वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन और उनकी आपूर्ति करनी,

(ii) उचित मूल्य पर सामान को उपलब्ध कराना,

(iii) अनुचित व्यवहार जैसे जमाखोरी, कालाबाजारी, ज्यादा कीमत आदि को न करना,

(iv) समाज के सामान्य कल्याण और विकास की दिशा में योगदान करना,

(v) निवेशकों के लिए उचित वापसी पर ध्यान देना,

(vi) उपभोक्ता शिक्षा की दिशा में कदम उठाना, एवं

(vii) प्राकृतिक संसाधनों एवं वन्य जीवन का संरक्षण तथा पर्यावरण की रक्षा करना।

(ग) व्यवसाय के **मानवीय उद्देश्य** मुख्य रूप से अपने कर्मचारियों और उनके कल्याण के हितों की रक्षा करने के संदर्भ में है। कुछ प्रमुख मानवीय उद्देश्य इस प्रकार हैं-

(i) कर्मचारियों को उचित पारिश्रमिक एवं प्रोत्साहन प्रदान करना।

टिप्पणी

(ii) कर्मचारियों के लिए सुरक्षित वातावरण एवं कार्य करने की बेहतर परिस्थिति उपलब्ध कराना।

(iii) कार्यों को रोचक एवं चुनौतीपूर्ण बनाकर सही व्यक्तियों को सही काम देकर कार्य में संतुष्टि प्रदान करना।

(iv) कर्मचारियों को अधिक से अधिक पदोन्नति के अवसर प्रदान करना।

(v) कर्मचारियों के विकास के लिए प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रम की शुरूआत करना।

(vi) समाज में पिछड़े वर्गों, शारीरिक रूप एवं मानसिक रूप से विकलांग लोगों के लिए रोजगार उपलब्ध कराना।

(घ) व्यवसाय के **राष्ट्रीय उद्देश्य** के अंतर्गत राष्ट्रीय उद्देश्यों, लक्ष्यों एवं आकांक्षाओं को पूरा करना है: जैसे-

(i) रोजगार के अवसरों का निर्माण करना

(ii) सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना

(iii) राष्ट्रीय हित एवं प्राथमिकताओं के अनुसार वस्तुओं का उत्पादन एवं उसकी आपूर्ति करना

(iv) ईमानदारी से नियमित रूप से करों या अन्य देय का भुगतान करना।

(v) अच्छे औद्योगिक सम्बन्धों को बढ़ावा देकर कानून और व्यवस्था को बनाए रखने में राज्य की मदद करना एवं

(vi) सरकार द्वारा समय-समय पर लागू की जाने वाली आर्थिक एवं वित्तियों नीतियों के क्रियान्वयन में सरकार को सहायता करना।

(ङ) व्यापार के **वैश्विक उद्देश्य** से तात्पर्य वैश्विक बाजार की चुनौतियों का सामना करने से है।

कुछ वैश्विक उद्देश्य इस प्रकार है-

(i) विश्व स्तर पर प्रतियोगी वस्तुओं एवं सेवाओं को उपलब्ध करना।

(ii) अमीर एवं गरीब देशों के बीच अपने कार्यों का विस्तार करके असमानताओं को कम करना।

1.4.1 व्यवसाय में लाभ की भूमिका

व्यवसाय में लाभ की महत्वपूर्ण भूमिका होती है निम्न बिन्दु व्यापार में लाभ की भूमिका को दर्शाते हैं:

1. **उत्तर जीविता :** लाभ के द्वारा व्यवसाय की पुरानी संपत्तियों को नई संपत्तियों से बदला जा सकता है, यह व्यापार को निरंतर चलाने में भी सहायक है।
2. **भविष्य का विकास एवं विस्तार :** अतिरिक्त लाभ का उपयोग व्यवसाय के विस्तार के उद्देश्य के लिए भी किया जा सकता है। नए क्षेत्रों में प्रवेश से उद्यम और विकास में मदद मिलती है।
3. **प्रोत्साहन :** जो बड़ी मेहनत करते हैं लाभ उन व्यवसाइयों के लिए प्रोत्साहन स्वरूप होता है। लाभ व्यवसायी को अधिकतम प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।
4. **प्रतिष्ठा :** लाभ कमाने वाले संगठन अपने कर्मचारियों को उच्च मजदूरी/वेतन और अन्य सुविधाएं देने के लिए प्रेरित करता है। यह कर्मचारियों को संस्था के साथ जुड़े रहने में मदद करता है और उद्यम में शामिल होने के लिए अत्यधिक सक्षम व्यक्तियों को भी आकर्षित कर सकता है। इस प्रकार लाभ कमाने का उद्देश्य समाज में सम्मान दिलाता है।
5. **लक्ष्यों की प्राप्ति :** केवल लाभ कमाने वाले उद्यम लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यय की आवश्यकता होती है।
6. **दक्षता की माप :** किसी भी संगठन की सफलता का मूल्यांकन उसके लाभ को देखकर किया जा सकता है। इसलिए लाभ व्यवसाय की सफलता का संकेत है। यह व्यवसाय की सफलता को मापने में सक्षम है।
7. **व्यवसायी के लिए आजीविका का साधन :** व्यवसाय से प्राप्त होने वाला लाभ व्यक्तियों के परिवार के लिए एक नियमित आय है।

1.4.2 व्यावसायिक जोखिम

व्यवसाय निश्चित रूप से अनिश्चितताओं (जोखिम) से भरा होता है। इन जोखिमों के अलग-अलग रूप हो सकते हैं जैसे कि फैशन में बदलाव के कारण नुक्सान, बाजार मूल्यों में गिरावट, उत्पादित सामान में आग लग जाना, तूफान एवं चक्रवात, चोरी आदि के रूप में कभी भी जोखिम का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक उद्यम चलाते समय जोखिम की महत्वपूण भूमिक होती है। व्यावसायिक जोखिम से तात्पर्य है भविष्य में अनिश्चित घटनाओं के कारण नुकसान की संभावना।

व्यापार में जोखिम की प्रकृति-

1. **अनिश्चितता :** व्यावसायिक जोखिम भविष्य में अनिश्चितता के कारण है। प्राकृतिक आपदाएं जैसे बाढ़, भूकंप आदि के परिणामस्वरूप हानि की संभावना होती है। हड़ताल, तालाबंदी, दुर्घटना, चोरी, डकैती आदि जैसे मानवीय कारणों से भी नुकसान हो सकता है। अन्य संभावनाओं में जैसे- प्रतियोगिता, तकनीकी परिवर्तन, मूल्य में गिरावट आदि कारण भी हो सकते हैं।

2. **लाभ जोखिम का प्रतिफल है :** एक व्यावसायिक संस्था जो जोखिम उठाने को तैयार हो वही बेहतर लाभ प्राप्त कर सकती है। उच्च जोखिम के परिणामस्वरूप उच्च लाभ भी प्राप्त होती है।

3. **मापने में समस्या :** एक व्यवसायी को कुछ जोखिमों का अनुमान भी लग जाता है परंतु वह भविष्य में होने वाले सभी जोखिमों की भविष्यवाणी भी नहीं कर सकता है। इसलिए इसका सही-सही अनुमान लगाना असंभव है।

4. **व्यापार का आवश्यक तत्व :** जोखिम उठाए बिना व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन नहीं किया जा सकता। जोखिम उठाने के लिए तैयार रहना ही व्यवसाय की सफलता का संकेत है।

5. **परिवर्तनशीलता :** व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार के अनुसार जोखिम का भी आकार बदलता है। यदि निवेश की गई राशि ज्यादा है तो जोखिम का खतरा भी उतना ही ज्यादा होगा, समय एवं प्रतिस्पर्धा के साथ भी जोखिम का स्तर बदलता रहता है।

व्यवसाय में जोखिम के कारण

1. **प्राकृतिक कारण :** आग, बाढ़, तूफान, चक्रवात, भूकंप, अकाल, बिजली, बर्फबारी, ज्वार आदि से जान-माल एवं संपत्ति की हानि होती है। ये प्राकृतिक कारण, व्यवसाय के नियंत्रण में नहीं है।

2. **आर्थिक कारण :** यह बाजार की स्थितियों में परिवर्तन को संदर्भित करता है। इन आर्थिक कारणों में मांग में उतार-चढ़ाव, कीमत में उतार-चढ़ाव, सस्ते विकल्प की उपलब्धता, प्रतिस्पर्धा कारोबारी कम्पनियों के आगमन आदि हो सकते हैं।

3. **राजनीतिक कारण :** ये कारण सरकार की नीतियों में परिवर्तन का उल्लेख करते हैं। सरकार की अस्थिरता के कारण लाइसेंस नीति एवं कर में परिवर्तन होता है जिससे व्यवसाय प्रभावित होता है। इसमें व्यवसाय को हानि हो सकती है। आयात एवं निर्यात पर प्रतिबंध, उच्चकरणी दर, उधार पर ब्याज में वृद्धि आदि से व्यवसाय को नुकसान हो सकता है।

4. **मानवीय कारण :** अक्षम प्रबंधन एवं कर्मचारियों की लापरवाही भी व्यवस्थित हानि का कारण हो सकती है। कार्यकर्त्ता मशीनों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। वे हड़ताल, तालाबंदी में शामिल होकर व्यवसाय को नुकसान पहुंचा सकते हैं। यदि प्रबंधन भी उत्पादों की मांग का अनुमान लगाने में विफल होता है तो, नुकसान हो सकता है। मानव क्रियाओं में अनिश्चितताओं के कारण जालसाजी, नकदी की हेरा-फेरी, माल की चोरी, दंगे, युद्ध आदि हानि हो सकती हैं।

5. **भौतिक एवं तकनीकी कारण :** प्रौद्योगिकी में बदलाव के चलते मशीन अपने अपेक्षित जीवन से पहले क्षतिग्रस्त हो सकती है। गैस के रिसाव, बॉयलर के फटने आदि के कारण यांत्रिक विफलताएं उत्पन्न होती हैं, संपत्ति का मूल्य कम हो सकता है, वजन में कमी, वाष्पीकरण आदि अन्य प्रकार के भौतिक कारण हैं जिससे हानि हो सकती है।

पाठगत प्रश्न-1.3

1. मोहन ने हाल में ही अपना एमबीबीएस कोर्स पूरा किया है। वह अपने व्यवसाय का चयन नहीं कर पा रहा है। निम्न तालिका को भरकर उसका मार्गदर्शन करें:

यदि वह चयन करता है	उसे क्या करना चाहिए?	उसे वापसी में क्या मिलेगा?
(क) व्यवसाय		
(ख) पेशा		
(ग) रोजगार		

2. यदि आवश्यक हो तो निम्न वाक्यों को ठीक करें-

(क) व्यापार काम करने के अवसरों को कम करता है और इस प्रकार, देश में रोजगार पैदा करता है।

(ख) गुणवत्तापूर्ण सामान और सेवाओं का उत्पादन एवं निर्यात करने से किसी देश की राष्ट्रीय छवि खराब होती है।

(ग) व्यावसायिक उद्देश्य केवल लाभ कमाने पर केन्द्रित होना चाहिए।

(घ) रोजगार के अवसरों का सृजन और सरकार को ईमानदारी से करों एवं अन्य देयताओं का भुगतान करना एक व्यवसाय के राष्ट्रीय उद्देश्य हैं।

(ङ) करों के भुगतान से बचने के लिए व्यवसायी को खातों का झूठा विवरण तैयार करना चाहिए।

(च) व्यवसाय में लाभ की कोई भूमिका नहीं होती है।

3. निम्नलिखित कारणों में व्यावसायिक जोखिम के कारणों की पहचान करें:

(i) बॉयलर फटने से एक्स-लिमिटेड को नुकसान हुआ है-

(अ) प्राकृतिक कारण (ब) राजनीतिक कारण

(स) शारीरिक कारण (द) आर्थिक कारण

(ii) अंकेक्षक ने वाई लिमिटेड में श्रमिकों के एक समूह द्वारा नकदी के दुरुपयोग की पहचान की-

(अ) प्राकृतिक कारण (ब) मानवीय कारण

(स) शारीरिक कारण (द) राजनीतिक कारण

(iii) सुजुकी लिमिटेड को सुनामी के कारण नुकसान उठाना पड़ा-

(अ) प्राकृतिक कारण (ब) मानवीय कारण

(स) आर्थिक कारण (द) राजनीतिक कारण

1.5 व्यावसायिक गतिविधियों का वर्गीकरण

आइये, अपने चारों ओर विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक गतिविधियों का पता लगाएं जो आमतौर पर एक अर्थव्यवस्था में होती हैं:

- उत्पादन या निर्माण
- तेल, प्राकृतिक गैस या खनिज की निकासी
- किसी एक जगह से सामान खरीदना और उसे अलग-अलग देशों या स्थान में बेचना।
- यातायात, भंडारण, बैंकिंग एवं बीमा आदि जैसी सेवाएं प्रदान करना।

अब हम उपर्युक्त शीर्षकों के अंतर्गत व्यावसायिक गतिविधियों के विवरण का विश्लेषण करेंगे। माल और सेवाओं के उत्पादन और/या प्रसंस्करण से सम्बन्धित व्यावसायिक गतिविधियां उद्योग शीर्षक के अंतर्गत वर्गीकृत की जाती है और उत्पादन के एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक वस्तुओं और सेवाओं के वितरण जैसी गतिविधियां वाणिज्य के अंतर्गत समूहीकृत की जाती है। इस प्रकार हम व्यावसायिक गतिविधियों को उद्योग एवं वाणिज्य में वर्गीकृत कर सकते हैं।

आइये अब इन दो श्रेणियों के विषय में विस्तार से जानते हैं।

1.5.1 उद्योग

उद्योग, उत्पादक उद्यमों या संगठनों का एक समूह है जो वस्तुओं या सेवाओं या आय के स्रोतों का उत्पादन या आपूर्ति करता है। उद्योग मुख्य रूप से ऐसी सभी व्यावसायिक गतिविधियों को संदर्भित करता है जो वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन बढ़ाने या उसके प्रसंस्करण से सम्बन्धित है। यह एक कच्चे माल या अर्द्ध कच्चे माल को पक्के माल में तैयार करता है। पृथ्वी पर उपस्थित कच्चे संसाधनों से वस्तुओं का निर्माण माल एवं वस्तुओं का विनिर्माण, फसलों, मछली, फूल आदि का उत्पादन, इमारत, बांध, सड़कों आदि का निर्माण ये सभी उद्योग के उदाहरण हैं। इन गतिविधियों को औद्योगिक गतिविधियां कहा जाता है और इन गतिविधियों में लगी इकाइयों को औद्योगिक उपक्रमों के रूप में जाना जाता है। हालांकि, व्यापक अर्थों में देखें तो बैंकिंग, बीमा, परिवहन जैसी सेवाओं का प्रावधान भी तृतीयक उद्योगों

के रूप में आते हैं जो कि उद्योगों का हिस्सा होते हैं।

उद्योगों का वर्गीकरण : प्रकृति की गतिविधि के आधार पर उद्योगों को वर्गीकृत करने से पहले हमें इसके विभिन्न वर्गीकरण के तरीकों के विषय में विस्तार से विचार करना चाहिए।

(क) प्राथमिक उद्योग : इसके अंतर्गत कृषि, वानिकी, मछली पकड़ना, उत्खनन और खनिजों को निकालना शामिल है। इसे दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

(i) आनुवंशिक उद्योग : इस उद्योग में कृषि, वानिकी पशुधन एवं मछली पकड़ने जैसी उत्पादन प्रक्रिया में मानवीय हस्तक्षेप द्वारा कच्चे माल का उत्पादन शामिल हो सकता है।

(ii) निष्कर्षण उद्योग : इसमें कच्चे माल निकालने की सामग्री का उत्पादन शामिल है जिसे खेती के माध्यम से संवर्द्धित नहीं किया जा सकता है जैसे कि खनिज पदार्थों का खनन, पत्थर की खदान एवं खनिज ईंधन की निकासी आदि।

उद्योगों का वर्गीकरण

(गतिविधि की पकृति पर आधारित)

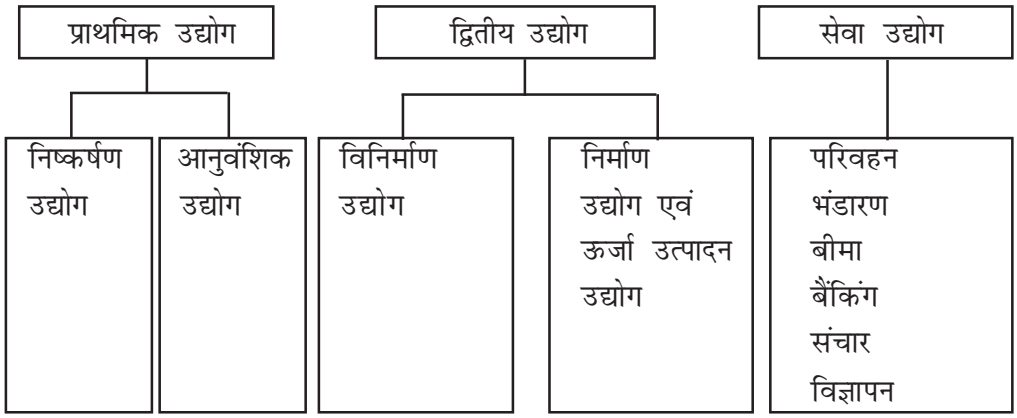

चित्र 1.3 उद्योगों का वर्गीकरण

द्वितीयक उद्योग : इसके अंतर्गत विनिर्माण उद्योग शामिल हैं जो

(i) प्राथमिक उद्योग द्वारा आपूर्ति किए गए कच्चे माल को लेना है और उन्हें उपभोक्ता वस्तुओं में संसाधित करता है। या

(ii) आगे की प्रक्रिया में इन कच्चे उत्पादों को माध्यमिक उद्योग उत्पादों में बदल देता है, या

(iii) उपभोक्ता या गैर-उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण के लिए उपयोग किए जाने वाले पूंजीगत उत्पाद का निर्माण करता है। इस क्षेत्र में ऊर्जा उत्पादन उद्योगों के साथ-साथ निर्माण उद्योग भी शामिल होते हैं।

द्वितीयक उद्योग को निम्न में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) भारी उद्योग या बड़े पैमाने पर उद्योग जिसमें संयंत्र और मशीनरी में बड़े पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।

(ब) लघु उद्योग जिसमें संयंत्र और उपकरण में एक छोटे पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है।

वर्गीकरण निवेश के आधार पर होता था लेकिन संशोधित एमएसएमई वर्गीकरण में कंपनी का टर्नओवर भी शामिल है।

संशोधित एमएसएमई 1 जून, 2020 के अनुसार वर्गीकरण इस प्रकार है।

विनिर्माण क्षेत्र का उद्योग

उपक्रम	**विक्रय स्तर के आधार पर**
सूक्ष्म उपक्रम	₹5 करोड़ तक
लघु उपक्रम	₹5–50 करोड़ तक
मध्यम उपक्रम	₹50–250 करोड़ तक

सेवा उद्योग : इस क्षेत्र को सेवा क्षेत्र उद्योग भी कहा जाता है और उसमें ऐसे उद्योग शामिल होते हैं जो कोई दृश्य सामान नहीं बनाते हैं, सेवएं प्रदान करते हैं या अस्पृश्य लाभ या संपत्ति प्रदान करते हैं। आमतौर पर इस क्षेत्र में निजी एवं सरकारी उपक्रम दोनों काम करते हैं। इस क्षेत्र में बैंकिंग, वित्त, बीमा, अचल संपत्ति, सेवाएं, थोक, खुदरा, परिवहन, पर्यटन, स्वास्थ्य, सूचना एवं संचार सेवाएं शामिल हैं।

सेवा उपक्रम : ये उपक्रम सेवाओं को प्रदान करते हैं और उपकरणों के निवेश के संदर्भ में परिभाषित किए जाते हैं।

अन्य उद्योग

1. **कुटीर उद्योग :** एक ऐसा उद्योग जहां उत्पादों या सेवाओं का निर्माण कारखाने में न होकर, घर में किया जाता है। कुटीर उद्योग द्वारा बनाए गए उत्पाद एवं सेवाएं अक्सर बेहतर एवं विशिष्ट होती हैं, इस तथ्य को देखते हुए कि वे आमतौर पर बड़े पैमाने पर उत्पादित नहीं होती हैं, इस क्षेत्र में उत्पादकों को अधिकतर कई बड़ी फैक्ट्री आधारित कंपनियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश करते समय कई बड़े नुकसान का भी सामना करना होता है। (1) एक उद्योग जिसका श्रम परिवार की इकाइयों या अपने स्वयं के उपकरणों के साथ घर पर काम करने वाले व्यक्तियो के होते हैं (2) एक छोटा और प्रायः अनौपचारिक रूप से संगठित उद्योग (3) एक सीमित लेकिन अपने कार्य में उत्साहित गतिविधि या विषय।

कुटीर उद्योग के उदाहरण : बुनाई, मिट्टी के गर्तन आदि

चित्र 1.4 कृषि आधारित उद्योग

2. **कृषि आधारित उद्योग :** ये उद्योग अपने कच्चे माल के रूप में पौधों एवं जानवरों पर आधारित उत्पादों का उपयोग करते हैं। खाद्य प्रसंस्करण, वनस्पति तेल, सूती कपड़ा डेयरी उत्पाद एवं चमड़े के उत्पाद इसके उदाहरण हैं।
3. **खनिज आधारित उद्योग :** ये खनिज आधारित उद्योग खनन पर आधारित है और कच्चे माल के रूप में 'खनिज अयस्कों' का उपयोग करते हैं। ये उद्योग अन्य उद्योगों को भी प्रदान करते हैं। इनका उपयोग भारी मशीनरी एवं निर्माण की सामग्री के रूप में किया जाता है।
4. **समुद्र-आधारित उद्योग :** इस उद्योग के अंतर्गत समुद्र या महासागर में कच्चे माल को लेकर उत्पाद का निर्माण करते हैं जैसे- मच्छली का तेल आदि।
5. **वन-आधारित उद्योग :** ये उद्योग जंगल से लकड़ी जैसे कच्चे माल का उपयोग करते हैं। जंगल उद्योग से जुड़ा उत्पाद है- कागज, दवा एवं लकड़ी से बने सामान।
6. **निजी क्षेत्र के उद्योग :** निजी उद्योग वह व्यवस्था है जो किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह के स्वामित्वमें संचालित किए जाते हैं।
7. **सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग :** सार्वजनिक उद्योगों का स्वामित्व और प्रबंधन सरकार के द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल)।
8. **संयुक्त क्षेत्रीय उद्योग :** ये उद्योग व्यक्ति एवं राज्य के द्वारा संयुक्त रूप से संचालित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए मारुति उद्योग।
9. **सहकारी क्षेत्र के उद्योग :** सहकारी उद्योगों को संसाधनों की आपूर्ति, आपूर्तिकर्ताओं उत्पादकों या श्रमिकों द्वारा संचालित किया जाता है। उदाहरण के लिए अमूल इंडिया।

पाठगत प्रश्न-1.4

1. नीचे उद्योगों के कुछ समूह दिए गए हैं। प्रत्येक समूह में एक उद्योग समूह के साथ मेल नहीं खाता है। उस उद्योग का पता लगाकर उसे रेखांकित करें। इनमें से पहला

टिप्पणी

आपके लिए किया गया है। इनमें टैक्सटाइल को छोड़कर बाकी सभी खनन उद्योग से सम्बन्धित है।

(क) कृषि, वनजनित, कपड़ा, मत्स्य पालन

(ख) बांध, सड़कें, नहर, सीमेंट

(ग) मुर्गी पालन, शिकार, खनन, वनजनित

(घ) लौह एवं इस्पात, कपड़ा, रसायन कार्य, मत्स्य पालन

(ङ) तेल की खोज, कृषि, दुग्ध उत्पाद, शिकार

(च) फूलों की खेती, फिल्म, परिवहन, बैकिंग

2. निम्न चार्ट को पूरा कीजिए:

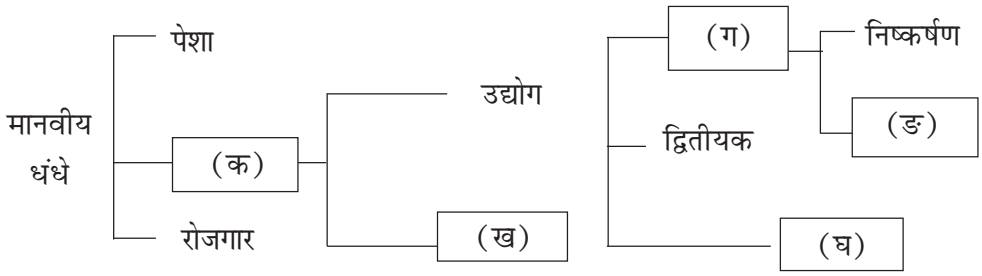

1.5.2 वाणिजय

वाणिज्य उत्पादन वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन बिन्दु के वितरण से उपभोग के अंतिम बिन्दु तक का अध्ययन करना है। आप जानते हैं कि उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को उन लोगों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए जिन्हें उनकी आवश्यकता है जिसके बिना लाभ कमाने और समाज की सेवा करने का व्यावसायिक उद्देश्य संभव नहीं होगा। इसके अंतर्गत कई अतिरिक्त गतिविधियां शामिल हैं। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति ब्रेड का उत्पादन करता है तो उसे सही समय पर सुविधाजनक स्थानों पर उपलब्ध कराना होता है। इसमें उत्पाद के विषय में लोगों को जागरूक करना, उत्पाद को सही स्थान पर संग्रहित करना, खुदरा दुकानों की व्यवस्था करना, उत्पाद की पैकेजिंग, उत्पाद का परिवहन, उत्पाद बेचना आदि जैसी गतिविधियां शामिल है। एक साथ ली गई इन सभी गतिविधियों को वाणिज्य के अंतर्गत जाना जाता है। यह वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादकों और उपभोक्ताओं के साथ आवश्यक सम्पर्क प्रदान करता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद एवं बिक्री की सुविधा प्रदान करता है। वास्तव में यह उन सभी कार्यों का अध्ययन करता है जो ग्राहकों को वस्तुओं और सेवाओं के सुचारू और निर्बाध प्रवाह को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। इस प्रकार, वाणिज्य में दो प्रकार की गतिविधियां शामिल हैं। जैसे-

(i) व्यापार एवं (ii) व्यापार में सहायक

व्यापार : माल के क्रय या विक्रय को व्यापार कहा जाता है।

व्यापार के लिए सहायक : दूसरी ओर माल की खरीद एवं बिक्री की सुविधा के लिए जिन गतिविधियों की आवश्यकता होती है, उन्हें सेवा या व्यापार के लिए सहायक माना जाता है।

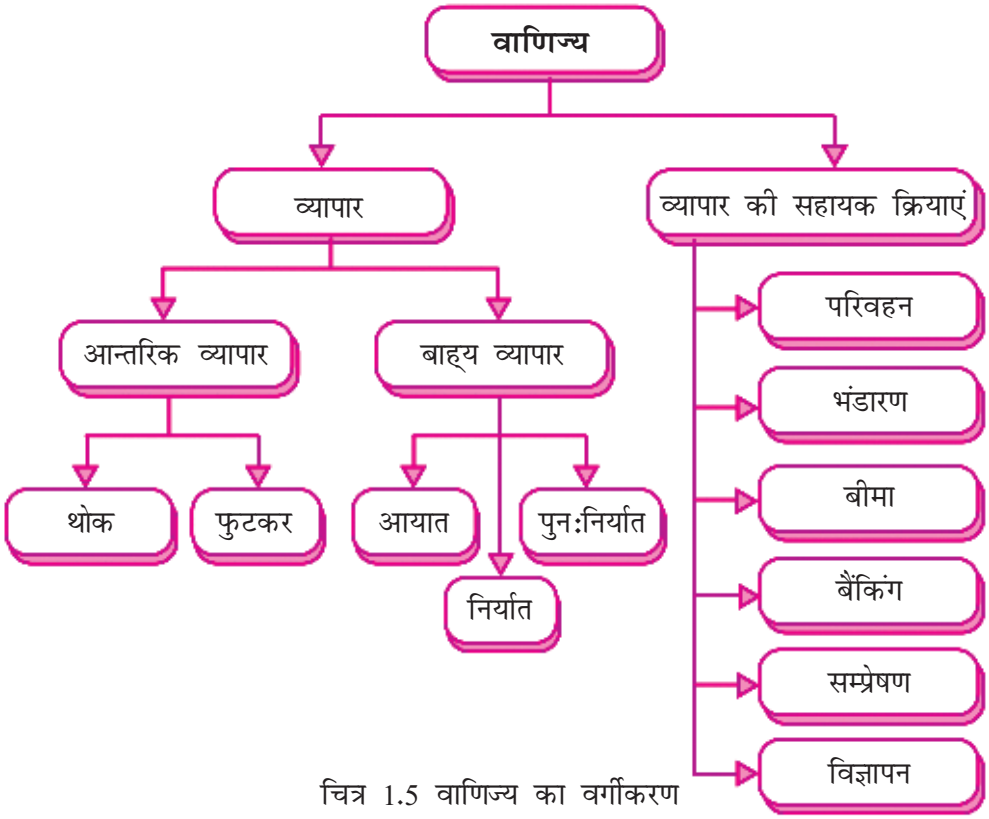

चित्र 1.5 वाणिज्य का वर्गीकरण

1.5.2.1 व्यापार

व्यापार वाणिज्य का एक अभिन्न अंग है। साधारणत: यह वस्तुओं एवं सेवाओं के विक्रय, हस्तांतरण एवं विनिमय से संदर्भित है। यह अंतिम उपभोक्ताओं को सामान एवं सेवाएं उपलब्ध कराने में मदद करता है। माल के निर्माताओं को जो थोक या बड़ी मात्रा में उत्पादन करते हैं, आमतौर पर संदर्भित सामानों को सीधे उपभोक्ताओं को बेचना बहुत मुश्किल होता है। उसका कारण यह है कि जहां वस्तुएं निर्मित होती हैं उस स्थान से उपभोक्ताओं की दूरी हो सकती है या एक समय में खरीदे गए उत्पाद की अधिक मात्रा तथा भुगतान आदि जैसी अन्य समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए वे शहरों के कुछ व्यक्तियों एवं सेवाओं का उपयोग करते हैं जो निर्माताओं से सामान खरीदते हैं और उपभोक्ताओं को बेचते हैं। उदाहरण के लिए, स्थानीय किराने की दुकान के मालिक निर्माताओं से सामान खरीदने के बाद उपभोक्ताओं को किराने की वस्तुएं बेचते हैं। कभी-कभी वह इसे थोक विक्रेताओं से खरीदता है जो निर्माताओं से थोक में सामान खरीदते हैं और उसे बेचते हैं। यहां इस बात पर ध्यान दिया जा सकता है कि थोक विक्रेताओं के साथ-साथ किराने की दुकान का मालिक भी व्यापार में लगा हुआ है। इस प्रकार व्यापार की विशेषताओं को निम्नलिखित रूप में सारांशिल किया जा सकता है-

(क) इसमें वस्तुओं की वास्तविक खरीद एवं बिक्री शामिल है।

(ख) यह एक स्थान व्यक्ति से किसी अन्य व्यक्ति या किसी अन्य स्थान पर बेचने के लिए माल या उत्पाद से संदर्भित है।

(ग) वे व्यापारी जिन्हें बिचौलिये के रूप में जाना जाता है, वे भी सामानों के वितरण की सुविधा प्रदान करते हैं।

(घ) व्यापार मांग और आपूर्ति को समान करने में सहायक होता है। उदाहरण के लिए पंजाब राज्य अपने राज्य में अधिक मांग न होने पर भी बहुत अधिक चावल का उत्पादन कर सकता है। पंजाब के चावल के व्यापारी इसे उड़ीसा और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में उपलब्ध कराते हैं जहां चावल की मांग ज्यादा है। इस प्रकार मांग एवं आपूर्ति का अनुपात बना रहता है।

व्यापार का वर्गीकरण : संचालन के क्षेत्र के आधार पर व्यापार को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है

(क) आंतरिक व्यापार

(ख) बाह्य व्यापार

(क) आंतरिक व्यापार : जब व्यापार किसी देश की सीमा के भीतर होता है तो आंतरिक व्यापार कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि किसी देश की सीमा के भीतर ही उसकी खरीद एवं बिक्री दोनों हो रही है।

उदाहरण के लिए, एक व्यापारी लुधियाना में निर्माता से ऊनी वस्त्र खरीद सकता है और उसे दिल्ली में खुदरा विक्रेताओं को बेच सकता है। इसी प्रकार एक व्यापारी शहर से थोक में उत्पाद खरीदकर गांव में बेच सकता है। इन दो उदाहरणों से हम पाते हैं कि आंतरिक व्यापार (क) निर्माताओं से खरीदकर थोक में खुदरा विक्रेताओं को बेच सकता है (थोक व्यापार के रूप में जाना जाता है) या (ख) इसे निर्माताओं या थोक विक्रेताओं से खरीदा जा सकता है और इसे उपभोक्ताओं को बेचा जा सकता है (जो खुदरा व्यापार के रूप में जाना जाता है)।

(ख) बाह्य व्यापार : विभिन्न देशों के बीच होने वाले व्यापार को बाह्य व्यापार के रूप में जाना जाता है। दूसरे शब्दों में बाह्य व्यापार राष्ट्रीय सीमाओं के पार माल/सेवाओं की खरीद या/और बिक्री को कहा जाता है। यह निम्न में से किसी भी रूप में हो सकता है।-

(i) देश 'ए' की कंपनियां अपने देश में बेची जाने वाली देश 'बी' की कंपनियों से सामान खरीदती हैं। इसे आयात व्यापार के रूप में जाना जाता है।

(ii) देश 'ए' की कंपनियां अपने देश में उतपादित देश 'बी' की कम्पनियों को बेचती हैं इसे निर्यात व्यापार के रूप में जाना जाता है।

(iii) देश की कम्पनी 'ए' अपने सामान को 'बी' देश की कम्पनी से खरीदकर देश 'सी' की कम्पनियों को बेचती है तो वह पुर्ननिर्यात व्यापार कहलाता है।

1.5.2.2 व्यापार के लिए सहायक/सहायक बिन्दु

व्यापार के लिए कई ऐसी गतिविधियां है जो उनमें आने वाली विभिन्न बाधाओं रुकावटों को दूर करके व्यापार में सहायक होती है।

(क) स्थान की बाधा : आप जानते हैं कि सामान का उत्पादन एक स्थान पर या देश में होता है लेकिन दुनिया भर में इसकी मांग होती है। इस बाधा को सड़क, रेल या तटीय शिपिंग के माध्यम से परिवहन सुविधाओं के विकास से हटाया जा सकता है, जिससे कच्चे माल को उत्पादन के स्थान पर और पक्के माल को कारखानों से उपभोग के स्थान पर पहुंचाने में सहायता मिलती है।

(ख) सूचना की बाधा : दुनिया के लोग किस प्रकार जान पाते हैं कि दुनिया के एक भाग में उत्पादों या सेवाओं का उत्पादन हुआ है। इस प्रकार से संदेशवाहन सुविधाओं की आवश्यकता है जो कि उत्पादकों, व्यापारियों और उपभोक्ताओं को एक-दूसरे से सूचनाओं के विनिमय में सहायता कर सके। इस प्रकार डाक सुविधाओं और टेलीफोन सुविधाओं को व्यावसायिक गतिविधियों के सहायक के रूप में माना जाता है।

(ग) समय की बाधा : आप यह भी जानते हैं कि कुछ सामानों का उत्पादन विशेष रूप से विशेष मौसम में किया जाता है, लेकिन इसकी मांग पूरे वर्ष भर रहती है विशेष रूप से वे सामान जो प्रकृति में खराब होते हैं या गैर-टिकाऊ होते हैं, जैसे कि सब्जियां, दूध, दही, दालें, गेहूं चावल आदि। इस बाधा को दूर करने के लिए भंडारण की व वेयर हाऊस संबंधी सुविधाओं के विकास करने की आवश्यकता है जो कि वस्तुओं का स्टॉक कर आवश्यकतानुसार विक्रय कर समय की बाधाओं को दूर करती है। वेयर हाउसिंग व्यापार को नुकसार या क्षति को रोकने के लिए भंडारण की समस्या को दूर करने में मदद करता है और उत्पाद की उपलब्धि को आवश्यकतानुसार सहज बनाता है। माल की निरंतर आपूर्ति और कीमतों को इससे स्थिरता प्राप्त होती हैं।

(घ) जोखिम की बाधा : आप जानते हैं कि व्यापार करने का अर्थ है जोखिम उठाने के लिए तैयार रहना। यह परिवहन या भंडारण के दौरान भंडार में हानि या लाभ के नुकसान के रूप में हो सकता है। यह प्राकृतिक भी हो सकता है और मानवीय भी। कुछ जोखिम बीमा योग्य हैं जिनका कुछ हद तक अंदाजा लगाया जा सकता है लेकिन कुछ जोखिम ऐसे भी हैं जो गैर बीमा योग्य इसलिए चोरी, आग, दुर्घटनाओं आदि के कारण कारखाने के निर्माण, मशीनरी भंडार में एवं सामान या परिवहन, फर्नीचर के सामान की क्षति का जोखिम, ऐसे जोखिम हैं जो कि माल का बीमा करा कर दूर किए जा सकते हैं। नाम मात्र प्रीमियम के भुगतान से, नुकसान राशि की क्षति एवं किसी प्रकार की चोट आदि क्षतिपूर्ति को बीमा कंपनी से वसूल किया जा सकता है।

(ङ) वित्त की बाधा : यह कहा जाता है कि वित्त किसी भी प्रकार के व्यवसाय के लिए रक्त के समान महत्वपूर्ण है जिसके बिना कोई भी व्यावसायिक कार्य नहीं किया जा सकता है। इसलिए व्यवसाय के सुचारू रूप से संचालन के लिए वित्तिय संस्थान का विकास आवश्यक एवं वांछनीय है। बैंकिंग एवं वित्तपोषण संस्था द्वारा परिसंपत्तियों का अधिग्रहण करने और दिन-प्रतिदिन के खर्च को पूरा करने के लिए आवश्यक पूंजी (वित्त) प्रदान की जाती है। वाणिज्यिक बैंक, व्यवसाय संगठनों को वित्तिय मदद प्रदान करते हैं: ऋण एवं अग्रिम राशि देकर ये बैंक व्यापारियों की ओर से चेक का संग्रह, विभिन्न स्थानों पर धन की निकासी और बिलों में छूट का कार्य भी करते हैं। विदेशी व्यापार में, आयातकों और निर्यातकों की ओर से वाणिज्यिक बैंकों द्वारा भुगतान की व्यवस्था की जाती है।

उपरोक्त सभी गतिविधियां व्यापारिक गतिविधियों को सहायता प्रदान करने के लिए व्यापारिक गतिविधियों को और भी सरल बनाने में मदद करती है। इसलिए इन्हें व्यापार में सहायक कहा जाता है।

	बाधा	**व्यापार में आने वाली बाधा को दूर करने वाला 'व्यापार में सहायक'**
1.	स्थान की बाधा	परिवहन
2.	सूचना की बाधा	संचार एवं प्रचार
3.	समय की बाधा	भंडारण
4.	जोखिक की बाधा	बीमा
5.	वित्त की बाधा	बैंक

पाठगत प्रश्न-1.5

1. निम्नलिखित वाक्यों के लिए एक शब्द का विकल्प दीजिए-

   (क) वस्तुओं एवं सेवाओं के विनिमय और वितरण की प्रक्रिया

   (ख) माल एवं सेवाओं को खरीद और बिक्री

   (ग) बड़ी मात्रा में माल खरीदना एवं बेचना

   (घ) निर्यात के लिए माल का आयात

   (ङ) विभिन्न देशों के बीच माल की खरीद एवं बिक्री

2. प्रत्येक के लिए दिए गए कथनों से संकेत लेकर निम्नलिखित अधूरे शब्दों को पूरा करें- प्रत्येक रिक्त अक्षर एक शब्द का प्रतिनिधित्व करता है- पहले प्रश्न का उत्तर आपके समझने के लिए दिया गया है-

(क) ..... ज्य (वाणिजय)

(ख) व्या.....

(ग) भं .....ण

(घ) .....र्या.....

(ङ) .....नः नि.....

(च) ..... क व्यापार

(छ) फु.....र व्यापार

संकेत :

(क) सभी गतिविधियां जो उपभोग के लिए वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता को सुविधाजनक बनाती हैं।

(ख) माल की खरीद एवं बिक्री।

(ग) माल का भंडारण करना वह चाहे कच्चा माल हो या तैयार माल हो।

(घ) विदेशों में उत्पाद को बेचना।

(ङ) एक देश की कंपनी किसी दूसरे देश की कंपनी से सामान खरीदती है जिसे किसी तीसरे देश की कंपनी को बेचा जाता है।

(च) माल थोक मात्रा में खरीदा और बेचा जाता है।

(छ) उपभोक्ता को माल कम मात्रा में बेचा जाता है।

पाठान्त प्रश्न

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. मानवीय गतिविधि से क्या तात्पर्य है?
2. 'व्यवसाय' शब्द को परिभाषित करें।
3. 'आनुवंशिक उद्योग' का अर्थ बताइये?
4. 'वाणिज्य' की व्याख्या करें?
5. 'व्यापार' क्या है?
6. 'व्यापार के लिए सहायक' से आपका क्या तात्पर्य है?
7. व्यापार के मार्ग में आने वाली बाधाओं का नाम बताइये
8. मानवीय कारणों से व्यापार में हानि के दो उदाहरण दें।

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. विभिन्न प्रकार के प्राथमिक उद्योगों की व्याख्या करें।
2. आप व्यावसायिक गतिविधियों को कैसे वर्गीकृत करेंगे?
3. व्यवसाय के विभिन्न मानवीय उद्देश्यों की व्याख्या करें?
4. 'उद्योग' का अर्थ बताइये। उद्योग के विभिन्न वर्गीकरणों की व्याख्या करें।
5. 'वाणिज्य' शब्द को परिभाषित करें। साथ ही वाणिज्य से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों का वर्णन करें।
6. व्यवसाय में 'लाभ' की भूमिका को स्पष्ट करें।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. व्यावसायिक जोखिम से आपका क्या अभिप्राय है? व्यावसायिक जोखिमों के प्राकृतिक कारणों को व्याख्या करें।
2. व्यावसायिक जोखिमों के कारणों का वर्णन करें।
3. 'लाभ व्यवसाय में वैसी ही भूमिका निभाता है जैसे मनुष्य के शरीर में रक्त' इस कथन पर में अपनी टिप्पणी कीजिए।
4. आपका दोस्त रमेश एक व्यवसाय शुरू करना चाहता है। इसलिए वह व्यापार के जोखिम और उनके कारणों को जानना चाहता है। उसे व्यावसायिक जोखिमों का अर्थ उसके कारण बताएं।

पाठ्गत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. ऐसी सभी गतविधियां जो पैसे कमाने या आजीविका के उद्देश्य से की जाती है, आर्थिक गतिविधियां कहलाती हैं।
2. (क) स्कूल के बगीचे में कार्य करने वाला व्यक्ति
   (ख) रेस्टोरेंट में खाना बनाती एक महिला
   (ग) एक आदमी द्वारा व्यापार केन्द्र की पुताई करना
   (घ) एक स्कूल में छात्रों को पढ़ाने वाला एक शिक्षक
   (ङ) एक चार्टड अकाउंटेंट द्वारा कम्पनी के खाने तैयार करना।

1.2

व्यवसाय	पेशा	रोजगार
(घ) (ङ)	(झ) (ण)	(ख) (ग)

(च) (छ) (छ) (ज)

1.3

	यदि वह चयन करता है	उसे क्या करना चाहिए?	वह वापसी में क्या प्राप्त करता है?
	(क) व्यवसाय	वह एक दवा की दुकान खोल सकता है या एक दवाई बनाने वाली कंपनी खोल सकता है	लाभ
	(ख) पेशा	अपना क्लिनिक खोलना	फीस
	(ग) रोजगार	एक अस्पताल में नौकरी करना	वेतन

2. (क) व्यवसाय कार्य के अवसर को बढ़ाता है इस प्रकार देश में रोजगार उत्पन्न करता है।

(ख) गुणवत्ता पूर्ण वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन एवं निर्यात करके, किसी देश की राष्ट्रीय छवि में सुधार होता है।

(ग) व्यावसायिक उद्देश्यों को केवल लाभ कमाने पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं करना चाहिए

(घ) सुधार की कोई आवश्यकता नहीं है।

(ङ) व्यवसाइयों को खातों का सही विवरण तैयार करना चाहिए और करों का भुगतान ईमानदारी से करना चाहिए।

(च) लाभ की व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका होती है

3. (i) स (ii) ब (iii) अ

1.4

1. (ख) सीमेंट (ग) मुर्गी पालन (घ) मत्स्य पालन
   (ङ) दुग्ध उद्योग (च) फूलों की खेती
2. (अ) व्यवसाय (ब) वाणिज्य (स) प्राथमिक
   (द) सेवा (य) आनुवांशिक

1.5

1. (क) वाणिज्य (ख) व्यापार (ग) थोक बाजार
   (घ) पुर्ननिर्यात (ङ) बाह्य व्यापार
2. (ख) व्यापार (ग) भंडारण (घ) निर्यात

टिप्पणी

(ङ) पुर्ननिर्यात (च) भंडारण (छ) खुदरा

करें और सीखें

अपने क्षेत्र के कम से कम 10 व्यावसायिक उद्योगों की सूची बनाएं। उन्हें उद्योग, व्यापार एवं व्यापार के सहायक के रूप में वर्गीकृत करें। अपनी गतिविधि के अनुसार एक नोट लें और चार्ट तैयार करें।

रोल प्ले

सोहन की बेटी गीता अपना हेयर सैलून शुरू करना चाहती है। उसे उसके पिता की सहमति नहीं है क्योंकि वह चाहता है कि गीता वकील बने।

यहां सोहन और गीता के बीच की चर्चा की शुरूआत निम्न प्रकार है:

सोहन : बेटा! मैं चाहता हूं कि आप अपनी शिक्षा का उपयोग एक वकील के रूप में करें जिससे आप स्वतंत्र रहने के साथ-साथ समाज की सेवा भी करें।

गीता : पिताजी! मैं स्वतंत्र होने से ज्यादा अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के बारे में अधिक चिंतित हूं। मैं जनता का सेवक नहीं बनना चाहती हूं। मैं धन कमाना चाहती हूं और रोजगार देने वाली बननी चाहती हूं।

सोहन : मेरी बात सुनो! इसमें संतुष्टि जैसा कुछ भी नहीं है। समाज की सेवा करने से तुम्हें धन कमाने से अधिक संतुष्टि मिलेगी।

गीता : पापा! रोजगार सृजन भी समाज की सेवा करने का एक तरीका है।

अपने लिए और अपने दोस्त के लिए इस रोल-प्ले में एक भूमिका का चयन करें और उदाहरण स्वरूप विषय के पक्ष या विपक्ष में अपनी दलीलें पेश करें। (आप अपनी खुद की स्क्रिप्ट विकसित करने के लिए इस पाठ में शामिल की गई किसी भी अन्य अवधारणाओं का चयन करने के लिए स्वतंत्र हैं। अपनी भूमिका निभाएं और अपने अध्ययन का आनंद लें।)

2. श्वेता सेवा उद्योग के क्षेत्र में एक व्यवसाय शुरू करना चाहती है। उसके मित्र कबीर ने बताया कि इस क्षेत्र में अनेक अवसर हैं।

   श्वेता : कबीर! मैं सेवा उद्योग के क्षेत्र में व्यवसाय करना चाहती हूं।

   कबीर : बहुत बढ़िया, श्वेता। यह एक अच्छा विचार है। मैंने एनआईओएस की व्यावसायिक अध्ययन की पुस्तक में पढ़ा है कि सेवा उद्योग के क्षेत्र में बहुत सारे जोखिम हैं।

   श्वेता : कृपया मुझे उन जोखिमों के विषय में बताओ।

   अपने दोस्त के लिए एवं अपने लिए एक भूमिका का चयन करें। और सेवा उद्योग में विभिन्न प्रकार के जोखिमों व उनके कारणों का उल्लेख करें।

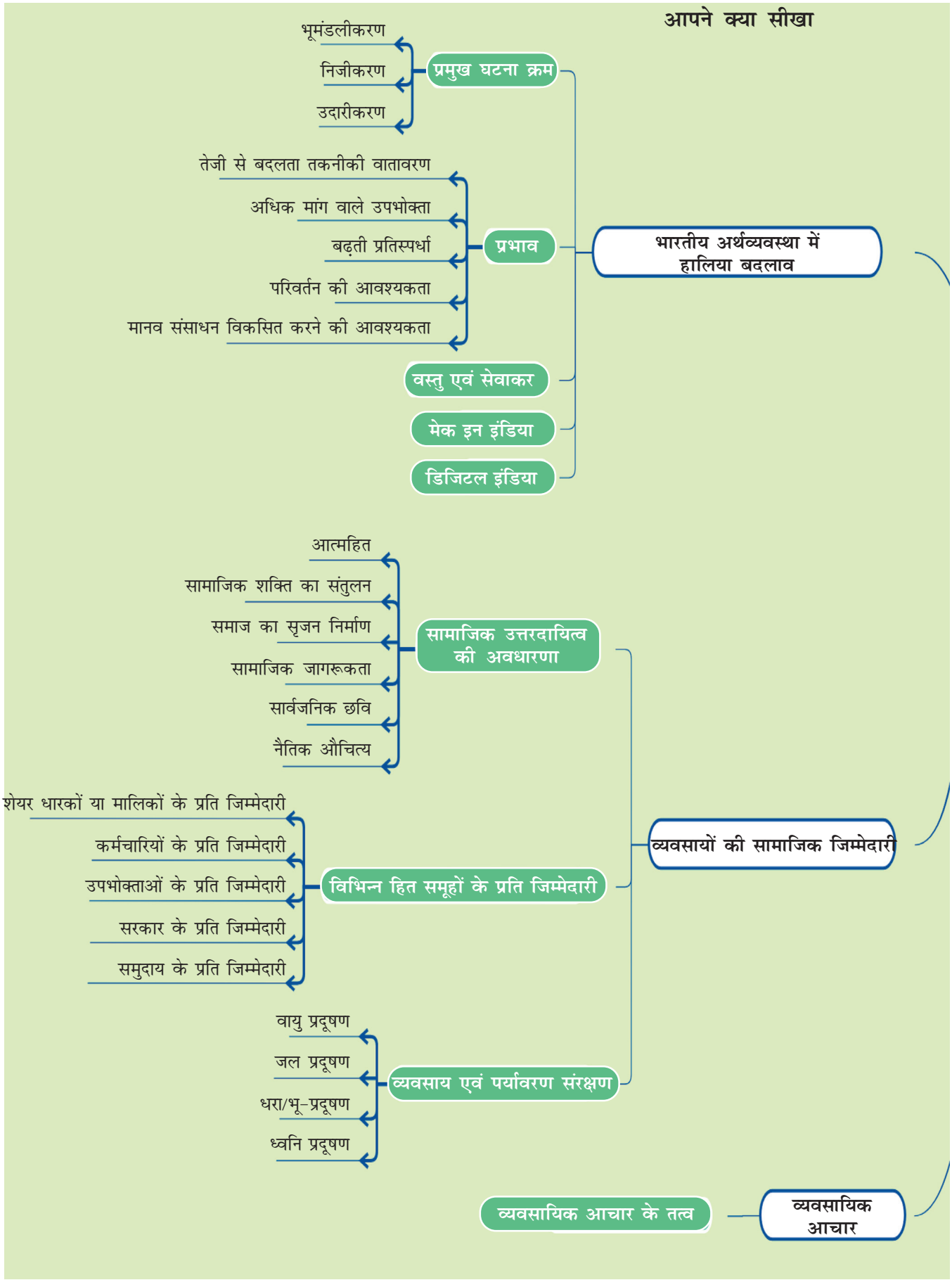

आपने क्या सीखा

भारतीय अर्थव्यवस्था में हालिया बदलाव
प्रमुख घटना क्रम
भूमंडलीकरण
निजीकरण
उदारीकरण
प्रभाव
तेजी से बदलता तकनीकी वातावरण
अधिक मांग वाले उपभोक्ता
बढ़ती प्रतिस्पर्धा
परिवर्तन की आवश्यकता
मानव संसाधन विकसित करने की आवश्यकता
वस्तु एवं सेवाकर
मेक इन इंडिया
डिजिटल इंडिया
व्यवसायों की सामाजिक जिम्मेदारी
सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा
आत्महित
सामाजिक शक्ति का संतुलन
समाज का सृजन निर्माण
सामाजिक जागरूकता
सार्वजनिक छवि
नैतिक औचित्य
विभिन्न हित समूहों के प्रति जिम्मेदारी
शेयर धारकों या मालिकों के प्रति जिम्मेदारी
कर्मचारियों के प्रति जिम्मेदारी
उपभोक्ताओं के प्रति जिम्मेदारी
सरकार के प्रति जिम्मेदारी
समुदाय के प्रति जिम्मेदारी
व्यवसाय एवं पर्यावरण संरक्षण
वायु प्रदूषण
जल प्रदूषण
धरा/भू-प्रदूषण
ध्वनि प्रदूषण
व्यवसायिक आचार
व्यवसायिक आचार के तत्व

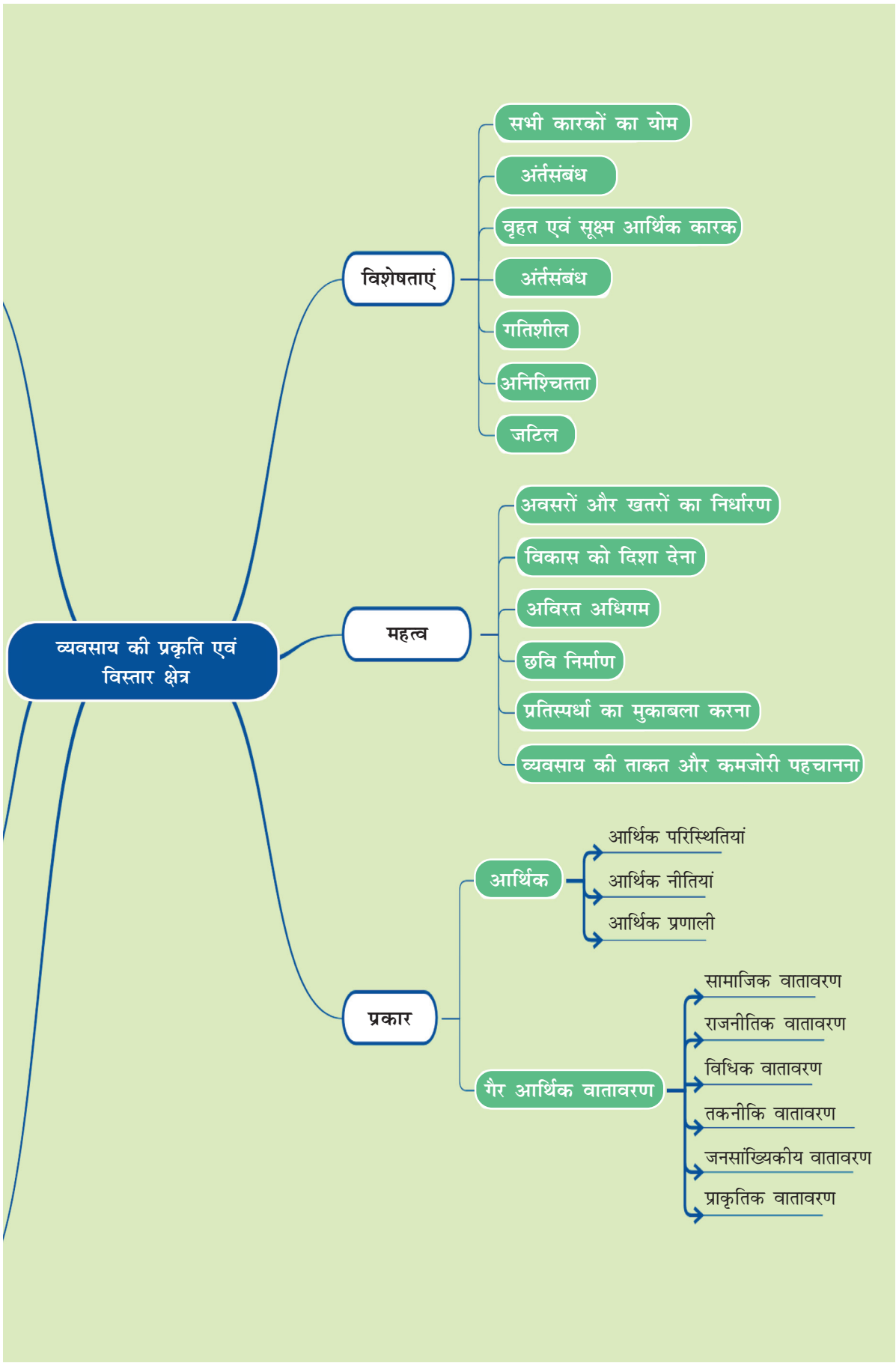
व्यवसाय की प्रकृति एवं विस्तार क्षेत्र
विशेषताएं
सभी कारकों का योग
अंर्तसंबंध
वृहत एवं सूक्ष्म आर्थिक कारक
अंर्तसंबंध
गतिशील
अनिश्चितता
जटिल
महत्व
अवसरों और खतरों का निर्धारण
विकास को दिशा देना
अविरत अधिगम
छवि निर्माण
प्रतिस्पर्धा का मुकाबला करना
व्यवसाय की ताकत और कमजोरी पहचानना
प्रकार
आर्थिक
आर्थिक परिस्थितियां
आर्थिक नीतियां
आर्थिक प्रणाली
गैर आर्थिक वातावरण
सामाजिक वातावरण
राजनीतिक वातावरण
विधिक वातावरण
तकनीकि वातावरण
जनसांख्यिकीय वातावरण
प्राकृतिक वातावरण